IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन और जगलाल चौधरी (1917–1935 ई0)"

दिलीप कुमार चौधरी

शोधार्थी

इतिहास विभाग

जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

स्वाधीनता समय के अमर सेनानी स्व0 जगलाल चौधरी का जन्म 05 फरवरी, 1895 ई0 को सारण जिले के गड़खा ग्राम में पासी समाज में हुआ था, इनका पिता का नाम मूशन चौधरी एवं माता का नाम तेतरी देवी था। उनका प्रारंभीक जीवन अभाव में गुजरा था वे बाल्यावस्था से ही मानव प्रेमी व मेधावी छात्र के रूप में रहे लगभग 17 वर्ष की आयु में उन्होंने प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा पास की, आई0एस0सी0 की परीक्षा भी वे प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण हुए बाद में वे एम0बी0बी0एस0 की पढ़ाई के लिए कलकत्ता चले गये परन्तु महात्मा गाँधी द्वारा चलाये गये असहयोग आंदोलन में उनके सहयोग के लिए कूद पड़े जिससे उनकी पढ़ाई अधूरी रही, इससे यह पता चलता है कि स्वहित के जगह राष्ट्रहित को सर्वोपरी रखा।

गाँधीजी की गिरफ्तारी के बाद जब असहयोग आंदोलन शिथिल पड़ गया तब जून 1922 ई0 में लखनऊ में अखिल भारतीय आंदोलन कमिटी की बैठक हुई, जिसमें देश की वर्त्तमान परिस्थिति की जाँच करने के लिए एक सत्याग्रह समिति बनाई गर्य, इसके सदस्य पंडित मोतीलाल नेहरू, हकीम अजमल खाँ, डॉ0 अंसारी तथा राजगोपालाचारी को इस समिति ने अपने प्रतिवेदन में बतलाया कि सम्पूर्ण देश अभी सत्याग्रह के लिए तैयार नहीं है। फिर भी प्रांतीय कांग्रेस कमिटी अगर चाहे तो उसे लघु पैमाने पर सत्याग्रह करने का अधिकार दिया जा सकता है। समिति ने विधान सभाओं के बहिष्कार को समाप्त कर देने की सिफारिश की तथा इस बात पर बल दिया कि कांग्रेस को चाहिये कि विधान सभाओं में अधिक से अधिक अपने प्रतिनिधि भेजकर सरकार के प्रत्येक कार्य का विरोध करें तथा विधान सभाओं की कार्यवाही का चलना असंभव बना दें। परिषदों के बहिष्कार के प्रश्न को लेकर सभी सदस्य एक मत नहीं थे। पं0 मोतीलाल नेहरू, हकीम अजमल खाँ तथा विट्ठल भाई पटेल परिषदों में प्रवेश का समर्थन करते थे परन्तु डॉ0 अंसारी और राजगोपालचारी परिषदों का पूर्णतया बहिष्कार चाहते थे।

ठीक इसी समय 1921–22 ई0 में जगलाल चौधरी प्रथम बार सारण जिला कांग्रेस समिति के सदस्य चुने गये। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य नेताओं में उनकी पहचान बन गयी और शीघ्र ही बिहार प्रांतीय कांग्रेस समिति के वे सदस्य चुन लिए गये। कांग्रेस में रहकर उन्होंने अपने उन्नतिशील विचारों से न केवल कांग्रेस संगठन को लाभान्वित किया बल्कि तत्कालीन राजनीति को एक दिशा देने में अपनी अहम भूमिका प्रदर्शित की। उनकी कार्यकुशलता एवं दूरदर्शिता के कारण ही पूर्णिया गाँधी आश्रम का भार सौपा गया था उन्होंने इस काल में कांग्रेसी संगठन एवं आश्रम के कृत्यों को मजबूती प्रदान की। उनके प्रयास से 1929 ई0 तक बिहार प्रांत में कांग्रेस के सदस्यों की संख्या 90 हजार से ऊपर हो गई थी।

इस प्रांत में उन जिलों में जहाँ कांग्रेस शाखाएँ थी, अनुमंडल एवं थाना कांग्रेस कमिटी शाखाएँ भी खोली गई जगलाल चौधरी के प्रयास के कारण सारण जिला में उल्लेखनीय प्रगति हुई। जिला कांग्रेस कमिटियों के लिये इन्ही शाखाओं से प्रतिनिधि निर्वाचित होते थे। चम्पारण जिला इस विषय में सबसे आगे था क्योंकि वहाँ के कुछ थानों में पहले से ही ग्राम समितियाँ काम कर रही थी।

गाँधीजी के नमक सत्याग्रह ने लोगों में अंग्रेजी बर्बरता का सामना करने का साहस पैदा किया। पूरा देश गाँधीजी के साथ चल पड़ा बिहार में समुद्र तट नहीं होने के कारण यहाँ के लोग सोडा से एक उप उत्पादन के रूप में नमक बनाकर **''नमक कानून''** भंग किया करते थे। श्री जगलाल चौधरी ने भी नमक सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया। सारण जिला के गोरिया कोठी, गड़खा में नमक सत्याग्रह करते हुए कई लोग गिरफ्तार हुए जगलाल चौधरी भी जेल गए, जेल में भी वे शान्त न रहे और वे कैदियों को संगठित करते रहे,।

इसी बीच स्वातंत्रय संग्राम एवं गाँधीजी के असहयोग आंदोलन ने इनके मन–मस्तिष्क को पूरी तरह उद्वेलित करे दिया उनके अवयवो एवं तंतुओं को झकझोर दिया अपने अनथक अहिर्नश संघर्ष क्रम में उन्होंने न जाने कितनी यातनाएँ सही, उत्पीड़न के कितने असहन दंश झेले, परन्तु अपने मार्ग से जरा भी विचलित नहीं हुए। चम्पारण का गाँधीजी का कार्य मूलतः मानवतावादी था किन्तु उसके साथ ही राष्ट्रीयता के जागरण का भी अनुप्रेरक उसका एक परिणाम चम्पारण के घोर सताए हुए किसानों के मन में जागरण की चेतना उदित करना था। किसी भी राष्ट्रीय आंदोलनों की यह एक आवश्यक शर्त्त है सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष राजनीतिक चेतना बढ़ाता है गाँधीजी के शब्दों में चम्पारण संघर्ष इस बात का प्रमाण था कि किसी भी श्रेत्र में जनता की निःस्वार्थ सेवा देश को राजनीतिक दृष्टि से अन्ततः सहायता प्रदान करती है। सत्याग्रह का चम्पारण में सफल प्रयोग किया गया था। राष्ट्रीय संघर्ष के परवर्ती दशकों में इस अस्त्र का कई बार व्यवहार में लिया गया। जगलाल चौधरी भी इस अस्त्र के कायल थे। जगलाल चौधरी हरिजन आंदोलन से काफी प्रभावित थे। उन्होंने टिकापट्टी के आश्रम में रहते हुए पूर्णिया के गाँव–गाँव में दलित जागृति फैलाई और इनके द्वारा अनेक रचनात्मक कार्य शुरू किए गए। 1937 ई0 के विधान सभा चुनाव में वे पूर्णिया के ही कुरसेला क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में विधायक निर्वाचित

हुए उन्होंने कुरसेला एस्टेट के जमीन्दार के उम्मीदवार को चुनाव में पराजित किया था। श्री कृष्ण सिंह मंत्रिमंडल में वे कैविनेट मंत्री बनें। उन्हे आबकारी और स्वास्थ्य विभाग मिला। इस विभाग में रहते हुए उनके द्वारा लागू किए गए **मध–निषेध** के कारण उन्हें अपनी ही पासी जाति के विरोध का सामना करना पड़ा चार सदस्यी मंत्रिमंडल के कैबिनेट मंत्री होने के कारण अपनी जाति और पूरे दलित वर्ग के लिए वे गौरव पुरूष भी थे लेकिन मध–निषेध लागू होने के कारण पासियों के समक्ष रोजगार की गंभीर समस्या उत्पन हो गई थी। करीब ढ़ाई साल तक सत्ता में रहने के बाद 1939 ई0 में द्वितीय विश्वयुद्ध में भारत को शामिल करने के मुद्दे पर सभी प्रदेशों के कांग्रेसी मंत्रिमंडल ने इस्तीफा दे दिया और इसके परिपेक्ष्य में जगलाल चौधरी ने भी इस्तीफा दे दिया।

जगलाल चौधरी आजीवन सत्ता स्वार्थ लौलुप्य एवं दलगत राजनीति से अपने को सर्वथ से अलग रखा तथा जिस प्रकार बादल स्वयं समुद्र का खारा पानी पीकर अविरल अमृत कणों से समस्त संसार को अधिसिंचित करता है उसी तरह निस्पृह एवं निर्लिप्त भाव से सम्पूर्ण मानवता की सेवा की। सच–पूछा जाय तो सर्वस्व देकर बदले में कुछ भी नहीं लेना ही यतिवर एवं युगपुरूष की नियति होती है। मंत्रद्रष्टा मनस्वी जगलाल ने भी हमेशा समाज और राष्ट्र को दिया ही बदले में लिया कुछ भी नहीं। वे बड़े ही अनुशासन प्रिय, संयमी, सहिष्णु, मृदुभाषी एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। उनमें लेश मात्र भी कृत्रिमता नहीं थी। नैतिक आदर्शों के तो प्रकाश स्तंभ थे वे। उनमे अप्रमित प्रतिभा एवं सर्जकीय क्षमता की तथा वे कई पुस्तकों के प्रणेता भी थे। कभी भी छल छद्मों की दारिया, ओछी एवं सतही राजनीति नहीं की और न दोहरे मानदण्डों एवं थोथे आदर्शों को कभी ओठा। बाबू जगलाल चौधरी के बाद ऐसा लगता है जैसे आदर्शों मुख राजनीति का अपहरण कर उसकी हत्या कर दी गयी है उसकी अंत्येष्टि मिटा दी गयी हो। अब तो ऐसा लगता है जैसे निष्ठा, ईमानदारी एवं निष्काम सेवा का पटाक्षेप हो गया है। हालांकि प्रायः हर युग में कीर्तिपुत्रों की उपेक्षा हुई है और हो रही है, फिर भी आज नहीं तो कल कलकत्ता में उसका मूल्यांकन तो होता ही है, इसमें कोई संदेह नहीं।

अतीत की कोई महत्वपूर्ण या विशिष्ट घटना आगत काल खण्ड में इतिहास बन जाती है और इतिहास स्वयं अपने आप को दुहराता है। आज की राजनीति भी अनिश्चितता एवं नैराश्य की स्थिति में किसी दिग्भ्रांत मोड़ पर खड़ी है तथा अपनी दृष्टि से किसी गाँधी, नेहरू, लोहिया अथवा जगलाल प्रभृत महापुरूष के नेतृत्व एवं दिशा निर्देश के लिए प्रतिक्षारत है।

सच पूछा जाय तो राजनीति भ्रष्टाचार का पर्याय बन गयी है। आज राजनीति का अपराधीकरण तथा अपराध का राजनीतिकरण हो गया है है जो अवसाद का विषय है। हम जिधर भी दृष्टि डाले चारों तरफ प्रत्येक क्षेत्र में हर स्तर पर विघटन ह्रास एवं गिरावट आयी है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि संप्रति समस्त मानव समाज पुनः संक्रमण के विकट दौर से गुजर रहा है त्रासद की इस विषय की घड़ी में मानवीय मूल्यों के

सशक्त पक्षधर स्वर्गीय जगलाल चौधरी की प्रासंगिक्ता अभी भी ज्यो की त्यो पूर्णतत् बनी हुई है तथा उनकी आवश्यकता बड़ी बेसब्री के साथ महसूस की जा रही है।

सन्दर्भ

1. के0के0 दत्त : बिहार का स्वातंत्रय आंदोलन का इतिहास।
2. राजेन्द्र प्रसाद, आत्म कथा।
3. स्पीचेज ऐंड राइटिंग्स ऑफ महात्मा गाँधी।
4. बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमिटी कीी वार्षिक रिपोर्ट 1928–29
5. प्रसन्न कुमार चौधरी, स्वर्ग पर धावा।